विवके अपने आप में धर्म है - युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 17 जून।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि विवेक को चक्षुमान अर्थात तीसरी आंख वाला माना गया है। मनुष्य के भीतर विवेक की चेतना जागे। विवेक अपने आपमें धर्म है। विवेकशील व्यक्ति धर्म की साधना कर सकता है।

युवाचार्यश्री ने कहा कि आंख हमारी उपयोगी। आंख हमारी इन्द्रिय है आंखों के सामने जब रूप आते हैं किंतु यह आवश्यक है देखने पर राग-द्वेश के भाव न आए यह खास बात होती है। इन्द्रिया राग-द्वेश मुक्त रहे ऐसा अभ्यास एक साधक को करना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि बाहरी की दुनिया को देखने के लिए आंख को खुला रखना होता है किंतु भीतर की ओर जाने के लिए आंख को बंद करना होता है।